खण्ड-165, अंक-2
सोमवार, 1 फाल्गुन, शक संवत् 1877
(20 फरवरी, 1956 ई0)

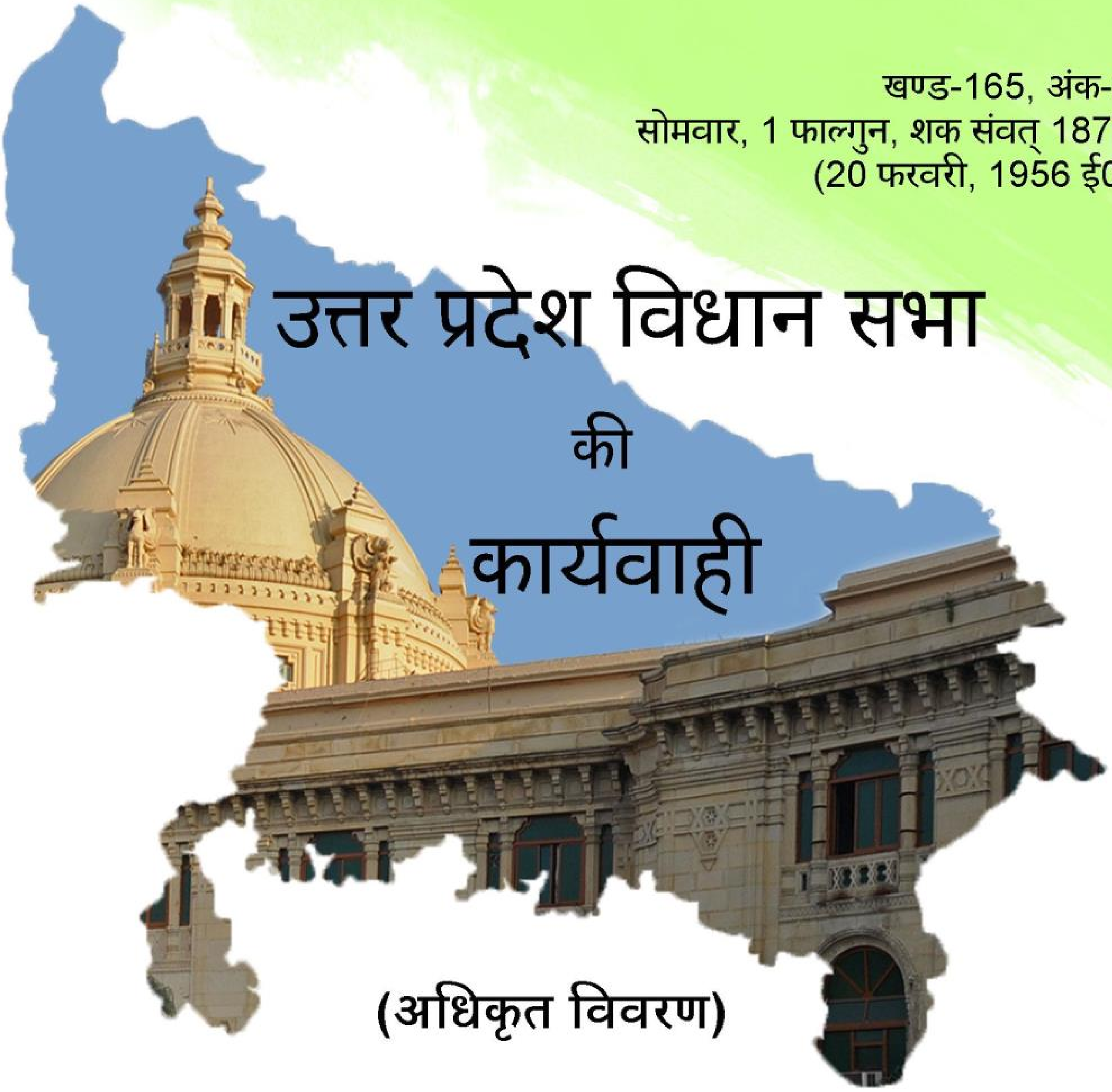

# उत्तर प्रदेश विधान सभा

## की

# कार्यवाही

## (अधिकृत विवरण)

खण्ड 165 में 7 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

---

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, उत्तर प्रदेश (भारत)
१९५६

---

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

# उत्तर प्रदेश विधान सभा

सोमवार, २० फ़रवरी, १९५६

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष श्री आत्माराम गोविन्द खेर की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई।

LIBRARY 22 MAR 1956 UTTAR PRADESH

उपस्थित सदस्यों की सूची (३३

अंसमान सिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अब्दुल मुईज खां, श्री
अब्दुल रऊफ खां, श्री
अमृतनाथ मिश्र, श्री
अली जहीर, श्री सैयद
अवधेशचन्द्र सिंह, श्री
अवधेशप्रताप सिंह, श्री
आशालता व्यास, श्रीमती
इरतजा हुसैन, श्री
उदयभान सिंह, श्री
उमाशंकर, श्री
उमाशंकर तिवारी, श्री
उमाशंकर मिश्र, श्री
उम्मेदसिंह, श्री
उल्फतसिंह चौहान निर्भय, श्री
ऐजाज रसूल, श्री
ओंकारसिंह, श्री
कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री
कमलापति त्रिपाठी, श्री
कमलासिंह, श्री
कमाल अहमद रिजवी, श्री
करनसिंह यादव, श्री
कल्याणराय, श्री
कामताप्रसाद विद्यार्थी, श्री
किन्दरलाल, श्री
किशनस्वरूप भटनागर, श्री
कुंवरकृष्ण वर्मा, श्री
कृपाशंकर, श्री
कृष्णशरण आर्य, श्री
केवलसिंह, श्री
केशभान राय, श्री
केशव पाण्डेय, श्री
केशवराम, श्री
कैलाशप्रकाश, श्री
ख्यालीराम, श्री
खुशीराम, श्री
खूब सिंह, श्री
गंगाधर जाटव, श्री
गंगाधर मैठाणी, श्री
गंगाधर शर्मा, श्री
गंगा प्रसाद, श्री
गंगाप्रसाद सिंह, श्री
गजेन्द्रसिंह, श्री
गज्जूराम, श्री
गणेशचन्द्र काछी, श्री
गणेशप्रसाद जायसवाल, श्री
गिरजारमण शुक्ल, श्री
गिरधारीलाल, श्री
गुप्तार सिंह, श्री
गुरुप्रसाद पाण्डेय, श्री
गुरुप्रसाद सिंह, श्री
गुलजार, श्री
गेंदासिंह, श्री
गोवर्धन तिवारी, श्री
गौरीराम, श्री
घनश्याम दास, श्री
चासीराम जाटव, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री

चन्द्रवती, श्रीमती
चन्द्रसिंह रावत, श्री
चन्द्रहास, श्री
चरणसिंह, श्री
चित्तरसिंह निरंजन, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
चिरंजीलाल पालीवाल, श्री
चुन्नीलाल सगर, श्री
छेदालाल, श्री
छेदालाल चौधरी, श्री
जगतनारायण, श्री
जगदीशप्रसाद, श्री
जगनप्रसाद रावत, श्री
जगन्नाथप्रसाद, श्री
जगन्नाथ बख्श दास, श्री
जगपतिसिंह, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जटाशंकर शुक्ल, श्री
जयपाल सिंह, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जयेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
जवाहरलाल, श्री
जवाहरलाल रोहतगी, डाक्टर
जुगलकिशोर, आचार्य
जोरावर वर्मा, श्री
ज्वालाप्रसाद सिन्हा, श्री
झारखंडेराय, श्री
टीकाराम, श्री (बदायूं)
टीकाराम, श्री (हरदोई)
डल्लाराम, श्री
डालचन्द, श्री
ताराचन्द्र माहेश्वरी, श्री
तुलाराम, श्री
तुलाराम रावत, श्री
तेजप्रताप सिंह, श्री
तेजबहादुर, श्री
तेजासिंह, श्री
त्रिलोकीनाथ कौल, श्री
दयालदास भगत, श्री
दर्शनराम, श्री
दलबहादुर सिंह, श्री
दाताराम, श्री
दीनदयालु शर्मा, श्री
दीनदयालु शास्त्री, श्री
दीपनारायण वर्मा, श्री
देवदत्त मिश्र, श्री
देवदत्त शर्मा, श्री
देवनन्दन शुक्ल, श्री
देवमूर्ति राम, श्री
देवराम, श्री
द्वारकाप्रसाद मौर्य, श्री
धनुषधारी पाण्डेय, श्री
धर्मसिंह, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
नत्थूसिंह, श्री
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नरदेव शास्त्री, श्री
नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
नरोत्तम सिंह, श्री
नवलकिशोर, श्री
नागेश्वर द्विवेदी, श्री
नाजिम अली, श्री
नारायणदत्त तिवारी, श्री
नारायणदास, श्री
नारायणदीन वाल्मीकि, श्री
निरंजनसिंह, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नेत्रपाल सिंह, श्री
नौरंगलाल, श्री
पद्मनाथ सिंह, श्री
परमानन्द सिन्हा, श्री
परमेश्वरी दयाल, श्री
परिपूर्णानन्द वर्मा, श्री
पहलवानसिंह चौधरी, श्री
पातीराम, श्री
पुत्तूलाल, श्री
पुद्दनराम, श्री
पुलिनविहारी बनर्जी, श्री

प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रतिपाल सिंह, श्री
प्रभाकर शुक्ल, श्री
प्रभुदयाल, श्री
प्रेमकिशन खन्ना, श्री
फजलुल हक, श्री
फतेहसिंह राणा, श्री
बद्रीनारायण मिश्र, श्री
बनारसीदास, श्री
बलदेवसिंह, श्री (बनारस)
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बलवीर सिंह, श्री
बलभद्रप्रसाद शुक्ल, श्री
बलवन्त सिंह, श्री
बशीर अहमद हकीम, श्री
बसन्तलाल, श्री
बसन्तलाल शर्मा, श्री
बाबूनन्दन, श्री
बालेन्दुशाह, महाराजकुमार
बेचनराम, श्री
बेनीसिंह, श्री
बैजनाथप्रसाद सिंह, श्री
बैजूराम, श्री
भगवानदीन वाल्मीकि, श्री
भीमसेन, श्री
भुवरजी, श्री
भृगुनाथ चतुर्वेदी, श्री
भोलासिंह यादव, श्री
मकसूद आलम खां, श्री
मंगलाप्रसाद, श्री
मथुराप्रसाद त्रिपाठी, श्री
मथुराप्रसाद पाँडेय, श्री
मदनगोपाल वैद्य, श्री
मदनमोहन उपाध्याय, श्री
मन्नीलाल गुरुदेव, श्री
मलखान सिंह, श्री
महमूद अली खां, श्री (रामपुर)
महमूद अली खां, श्री (सहारनपुर)
महाराजसिंह, श्री
महावीरप्रसाद शुक्ल, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महावीरसिंह, श्री
महीलाल, श्री
मान्धाता सिंह, श्री
मिजाजीलाल, श्री
मिहरबान सिंह, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुन्नूलाल, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुश्ताक अली खां, श्री
मुहम्मद अदील अब्बासी, श्री
मुहम्मद अब्दुल लतीफ, श्री
मुहम्मद तकी हादी, श्री
मुहम्मद नसीर, श्री
मुहम्मद फारुक चिश्ती, श्री
मुहम्मद मंजूरुल नबी, श्री
मुहम्मद शाहिद फाखरी, श्री
मुहम्मद सुलेमान अधमी, श्री
मोहनलाल, श्री
मोहनसिंह, श्री
मोहन सिंह शाक्य, श्री
यमुनासिंह, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
रघुनाथप्रसाद, श्री
रमेश वर्मा, श्री
राजकिशोर राव, श्री
राजनारायण सिंह, श्री
राजाराम किसान, श्री
राजाराम मिश्र, श्री
राजाराम शर्मा, श्री
राजेन्द्रदत्त, श्री
राजेश्वर सिंह, श्री
राधामोहन सिंह, श्री
रामअधार तिवारी, श्री
रामअधीनसिंह यादव, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकुमार शास्त्री, श्री
रामकृष्ण जैसवार, श्री

विधान सभा उत्तर प्रदेश

रामगुलाम सिंह, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामचरणलाल गंगवार, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामजी सहाय, श्री
रामदास आर्य, श्री
रामदास रविदास, श्री
रामदुलारे मिश्र, श्री
रामनारायण त्रिपाठी, श्री
रामप्रसाद, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामप्रसाद नौटियाल, श्री
रामबली मिश्र, श्री
रामभजन, श्री
रामरतन प्रसाद, श्री
रामराज शुक्ल, श्री
रामलखन, श्री
रामलखन मिश्र, श्री
रामलाल, श्री
रामशंकर द्विवेदी, श्री
रामसनेही भारतीय, श्री
रामसुन्दर पाँडेय, श्री
रामसुन्दर राम, श्री
रामसुभग वर्मा, श्री
रामसुमेर, श्री
रामस्वरूप, श्री
रामस्वरूप गुप्त, श्री
रामस्वरूप मिश्र विशारद, श्री
रामहरख यादव, श्री
रामेश्वरप्रसाद, श्री
लक्ष्मणराव कदम, श्री
लक्ष्मीदेवी, श्रीमती
लक्ष्मीशंकर यादव, श्री
लालबहादुर सिंह, श्री
लालबहादुरसिंह कश्यप, श्री
लीलाधर अष्ठाना, श्री
लुत्फअली खां, श्री
लेखराजसिंह, श्री
वंशनारायण सिंह, श्री
वंशीदास धनगर, श्री
वंशीधर मिश्र, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
वसी नकवी, श्री
वासुदेवप्रसाद मिश्र, श्री
विद्यावती राठौर, श्रीमती
विश्रामराय, श्री
विष्णुदयाल वर्मा, श्री
बीरसेन, श्री
वीरेन्द्रपति यादव, श्री
वीरेन्द्रशाह, राजा
व्रजभूषण मिश्र, श्री
व्रजरानी मिश्र, श्रीमती
व्रजवासीलाल, श्री
व्रजविहारी मिश्र, श्री
ब्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री
शंकरलाल, श्री
शम्भूनाथ चतुर्वेदी, श्री
शाँतिप्रपन्न शर्मा, श्री
शारदाबख्श सिंह, श्री
शिवकुमार मिश्र, श्री
शिवकुमार शर्मा, श्री
शिवदानसिंह, श्री
शिवनारायण, श्री
शिवपूजनराय, श्री
शिवप्रसाद, श्री
शिवमंगल सिंह, श्री
शिवमंगलसिंह कपूर, श्री
शिवराजबली सिंह, श्री
शिवराम पाँडेय, श्री
शिवराम राय, श्री
शिववक्षसिंह राठौर, श्री
शिववचनराव, श्री
शिवशरणलाल श्रीवास्तव, श्री
शिवस्वरूपसिंह, श्री
शुकदेवप्रसाद, श्री
शुगनचन्द, श्री
श्यामलाल, श्री
श्रीचन्द्र, श्री

विधान सभा उत्तर प्रदेश

श्रीनाथ भार्गव, श्री
श्रीनाथराम, श्री
श्रीनिवास, श्री
श्री पतिसहाय, श्री
सईद जहाँ मखफी शेरवानी, श्रीमती
संग्रामसिंह, श्री
सच्चिदानन्दनाथ त्रिपाठी, श्री
सत्यनारायणदत्त, श्री
सत्यसिंह राणा, श्री
सम्पूर्णानन्द, डाक्टर
सालिगराम जायसवाल, श्री
सावित्रीदेवी, श्रीमती
सियाराम गंगवार, श्री
सियाराम चौधरी, श्री
सीताराम शुक्ल, श्री
सुखीराम भारतीय, श्री
सुन्दरदास, श्री दीवान
सुन्दरलाल, श्री
सुरुजूराम, श्री
सुरेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री
सुरेशप्रकाश सिंह, श्री
सूर्य्यप्रसाद अवस्थी, श्री
सूर्य्यबली पाँडेय, श्री
सेवाराम, श्री
हबीबुर्रहमान अंसारी, श्री
हबीबुर्रहमान आजमी, श्री
हबीबुर्रहमान खां हकीम, श्री
हमीद खां, श्री
हरखयाल सिंह, श्री
हरगोविन्द पन्त, श्री
हरदयालसिंह पिपल, श्री
हरदेव सिंह, श्री
हरिप्रसाद, श्री
हरिश्चन्द्र अष्ठाना, श्री
हरिसिंह, श्री
हुकुमसिंह, श्री

---

नोट—श्री राम आसरे बर्मा ने श्री अध्यक्ष के कमरे में शपथ ग्रहण की।

अवध पंडा विधान सभा

# आचार्य नरेन्द्रदेव के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मन्त्री (डाक्टर सम्पूर्णानन्द)–अध्यक्ष महोदय, इस सदन के सामने समय-समय पर दुःखद प्रसंग आते रहे हैं परन्तु दुःख और शोक में भी तारतम्य हुआ करता है। मैं समझता हूं कि आज हम अपने एक आदमी के उठ जाने का शोक अनुभव कर रहे हैं। नरेन्द्रदेव जी के लिये हम अपने जिस शोक को व्यक्त करने का यत्न कर रहे हैं वह केवल इस सदन के पुराने सदस्य के लिये शोक नहीं है, वह एक ऐसे व्यक्ति के लिये शोक है जिसके लिये हम सब के हृदयों में बहुत बड़ा आदर और स्नेह था, जो हर दृष्टि से हमारा अपना था। मैं उनके सम्बन्ध में किन-किन बातों का जिक्र करूं। वह विद्वान थे, इस बात को सारा देश जानता रहा है, सुनता रहा है। परन्तु दुर्भाग्य तो इस बात का है कि देश को उनके प्रगाढ़ पाँडित्य का भी फ़ायदा नहीं मिल सका। उनको उतना वक्त ही नहीं मिला कि अपनी काफ़ी कृतियाँ छोड़ जाते। उनकी एक पुस्तक, जहाँ तक मैं जानता हूं, इस समय छप रही है और कई और पुस्तकें जो पढ़ने वालों के लिये बुद्धवाद और विशेषरूप से बुद्ध दर्शन का अध्ययन करने वालों के लिये, इस देश में और विदेश में बहुत बड़ी देन होती वे बेलिखी ही रह गईं और अब बेलिखी ही रह जायंगी। वे अध्यापक थे। काशी विद्यापीठ से आरम्भ से ही उनका सम्बन्ध था। उनके पढ़ाये हुये छात्र आज देश के कोने-कोने में फैले हुये हैं जो देश में बड़ी जिम्मेदारी के पदों पर हैं। इस सदन में भी उनमें से कई मौजूद हैं। वे उन इनेगिने लोगों में थे जिन्होंने काशी विद्यापीठ को इस देश की शिक्षा संस्थाओं में एक अद्वितीय स्थान दिया, जिनके व्यक्तित्व ने देश के कोने-कोने से उत्साही, प्रभावशाली, देशभक्त विद्यार्थियों को विद्यापीठ की ओर आकृष्ट किया। उनका क्षेत्र जितना भी हो लेकिन मेरा ऐसा विश्वास है कि वह कभी भी उन दिनों को नहीं भूल सकते जब कि उन्होंने उनके चरणों में अध्ययन किया था। राजनीति में जो उनका स्थान था उससे तो सभी लोग परिचित हैं। १९२१ से स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद तक वह बराबर काँग्रेस में रहे। आन्दोलनों में उन्होंने नेतृत्व किया, उनसे स्फूर्ति पाकर कितने ही लोग स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक और सेनापति बने। इस सदन में भी इस वक्त कई ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं जिनको उनके साथ काम करने का गौरव प्राप्त हुआ है। काँग्रेस से अलग होने के बाद भी वह देश के सर्वमान्य, गणमान्य नेता रहे और चाहे कोई भी व्यक्ति किसी भी दल या किसी भी पार्टी में रहा हो, ऐसा कोई भी शख्स जो भारतीय राजनीति में दिलचस्पी रखता है नहीं होगा जिसके दिल में उनके प्रति बहुत बड़ा आदर का स्थान न रहा हो।

समाजवाद के अनेक प्रकार के अर्थ होते हैं। समाजवाद का कार्यक्रम क्या हो इसके सम्बन्ध में मतभेद हो सकता है परन्तु इस सम्बन्ध में कोई मतभेद नहीं हो सकता है कि जिन लोगों ने भारत में समाजवाद को एक विशेष स्थान दिया, भारतीय समाजवाद की क्या रूपरेखा होनी चाहिये, इस चीज़ को स्पष्ट करने का प्रयन्न किया और बहुत दूर तक सफल करने का प्रयत्न किया, उन लोगों में नरेन्द्रदेव जी का स्थान सर्वश्रेष्ठ था। उनके चरित्र के सम्बन्ध में इतना ही कहना काफी है, कोई उनका कट्टर विरोधी भले ही रहा हो, लेकिन कभी भी किसी को उनके चरित्र के ऊपर हर्फ़ रखने का मौका नहीं मिला, हिम्मत नहीं हुई। जो लोग राजनीति दर्शन जैसे

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

दुरूह विषय का अध्ययन करते हैं और सार्वजनिक काम में पड़ते हैं प्राय: उनका स्वभाव रूखा सा हो जाता है। नरेन्द्रदेव जी का स्वभाव बिलकुल इससे विपरीत था, वह सदैव हंसमुख रहे। उनमें वह गुण था जिसे अंग्रेजी में सेंस आफ़ ह्यूमर कहते हैं, जिसके माने केवल इतना ही नहीं होते हैं कि दूसरों पर हंस लिया जाय बल्कि अपनें ऊपर और अपनी गल्तियों के ऊपर भी हंसा जा सके। यह बड़ा कठिन गुण होता है लेकिन नरेन्द्रदेव जी में यह चीज़ भरी हुई थी।

अपने प्रदेश में पहले वक्तों से एक खास किस्म का शील, एक विशेष व्यवहार का ढंग चला आता है जिसको दूसरे प्रदेश के लोग समझ नहीं पाते हैं। उसके लिये यदि कोई शब्द हो सकता है तो वह वजहदारी है, ज्यों-ज्यों पुरानी पीढ़ी खत्म होती जाती है त्यों-त्यों वजहदारी भी खत्म होती जाती है। जिन लोगों को उनसे मिलने का, उनके साथ रहने का मौका मिला होगा उन्होंने देखा होगा कि वह उस पुरानी वजहदारी को किस खूबसूरती के साथ बरतते थे। और इन सब बातों का एक परिणाम तो प्रत्यक्ष ही था कि राजनैतिक मतभेद चाहे कितने भी उत्कट किसी से क्यों न रहे हों परन्तु उनका शत्रु कोई नहीं था। सभी के हृदय में उनके लिये बहुत बड़ी इज़्ज़त, बहुत बड़ी प्रतिष्ठा, बहुत बड़ी शान ही थी। वजहदारी की एक मिसाल, निश्चय ही मुझसे उसका सम्बन्ध है, मैं देता हूं। बहुत दिनों की बात नहीं, अभी पिछले चुनाव की बात है। नरेन्द्रदेव जी भी खड़े थे एक जगह से, मैं भी एक जगह से खड़ा था। मुझसे उनसे कोई खास बात नहीं हुई, लेकिन एक आपस की बात थी। जिस कॉंस्टीट्यूएन्सी से मैं खड़ा था उसमें वह कभी एक दिन के लिये भी नहीं गये। उन्होंने लोगों से कह दिया कि मैं सम्पूर्णानन्द की कॉंस्टीट्यूएन्सी में नहीं जाऊंगा और मैं भी नरेन्द्रदेव जी की कॉंस्टीट्यूएन्सी में नहीं गया। मैंने भी लोगों से इस बात को कह रखा था। हो सकता है कि आज कल की पार्टी पालिटिक्स के लिहाज़ से हम दोनों ने ग़लत काम किया हो, शायद हम दोनों पर डिसिप्लिनरी ऐक्शन लिया जा सकता था, लेकिन एक आपस की बात थी जिसका व्यतिक्रम न मैं कर सकता था न वह कर सकते थे। यह एक पुरानी बात है जो कि आज कल के नये जमाने की बुद्धि में नहीं हो सकती। अच्छी बात हो या बुरी बात हो, मैं इसके सम्बन्ध में कुछ नहीं कह सकता।

नरेन्द्रदेव जी का शासन से कभी सम्बन्ध नहीं हुआ। यह देश और हमारे प्रदेश के लिये दुर्भाग्य की बात थी। यदि इस देश की गवर्नमेंट में १९३८ में या उसके बाद १९४७ के बाद उनका साथ हुआ होता तो मुझे इसमें रत्ती भर संदेह नहीं है कि शासन का रूप दूसरा होता और हमारा प्रदेश प्रगति की तरफ़ और तेजी के साथ बढ़ता। लेकिन शासन से सम्बन्ध न होते हुये भी उन्होंने कई ऐसे काम किये हैं जिनका शासन पर गहरा असर पड़ा है और इस प्रदेश के, प्रदेश के ही नहीं इस देश के भी जीवन पर गहरा असर पड़ा है, अभी चाहे उन बातों को लोग पूरी तरह से न समझते हों। आप देखें कि १९३८ में उत्तर प्रदेश की गवर्नमेंट की तरफ से एक कमेटी बैठाई गई प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा के लिये, प्राइमरी और सेकेन्डरी एजुकेशन के लिये। मैं उस वक्त शिक्षा मन्त्री था। मेरे अनुरोध पर नरेन्द्रदेव जी ने उसकी अध्यक्षता स्वीकार की। शिक्षा का सुधार जो कुछ थोड़ा बहुत हो पाया इस प्रदेश में, वह उस कमेटी की रिपोर्ट पर ही आधारित था। उस के बाद फिर मेरे सामने प्रश्न आया कि इतने दिनों के अनुभव के बाद शिक्षा को और रूप देना चाहिये या नहीं? क्या करना चाहिये? इस पर फिर से विचार किया जाय। थोड़े ही दिनों पहले चुनाव हो चुका था। चुनाव में कुछ कटुता भी आती ही है, आ चुकी थी, लेकिन शिक्षा मन्त्री के नाते मेरी समझ में यही आया कि नरेन्द्रदेव जी से अधिक

[डाक्टर सम्पूर्णानन्द]

उपयुक्त कोई दूसरा व्यक्ति नहीं हो सकता जो कि इस काम को फिर देख सके। मैंने फिर उन से अनुरोध किया कि हम नई कमेटी बिठाते हैं जाँच के लिये, आप इसकी अध्यक्षता स्वीकार करें। ज़ाहिर ही है, कुछ अदूरदर्शी लोगों ने मुझ से भी कहा कि आपको ऐसा नहीं करना चाहिये। कुछ अदूरदर्शी लोगों ने नरेन्द्रदेव जी से भी कहा कि आपको इसकी अध्यक्षता स्वीकार नहीं करनी चाहिये लेकिन यह हमारे लिये बड़े संतोष की बात है कि उन्होंने ऐसी छोटी बातों का ख्याल नहीं किया। उन्होंने उस कमेटी की अध्यक्षता स्वीकार की और अब जो हमारे प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा का कार्य चल रहा है उसका बहुत कुछ श्रेय भी उस कमेटी की रिपोर्ट को है। सन् १९३८ में यूनिवर्सिटी शिक्षा के सम्बन्ध में एक कमेटी नियुक्त की गई। ज़रूर जाब्ते से उसका अध्यक्ष मैं था लेकिन नरेन्द्रदेव जी केवल उसके उपाध्यक्ष ही नहीं थे बल्कि सच बात तो यह है कि उस कमेटी का काम चलाने का ज्यादातर बोझ उन्हीं के ऊपर था। उस कमेटी की रिपोर्ट में ज्यादातर जो अच्छाइयाँ हैं वे बहुत कुछ उन्हीं के परिश्रम के कारण ही हैं। ४, ५ वर्ष पहले इस बात की ओर ख्याल गया कि इस देश में संस्कृत की शिक्षा को जो भिन्न-भिन्न सरकारी, अर्द्धसरकारी और गैरसरकारी संस्थायें हैं और उनमें जो शिक्षा होती है उसे एक रूप दिया जाय। उसका स्टैन्डर्डाइज़ेशन होना चाहिये। हमने सबसे अनुरोध किया और कुछ गैरसरकारी यूनिवर्सिटियाँ जैसे गुरुकुल काँगड़ी, सबने हमारी बात स्वीकार की। उस कमेटी के सभापति भी आचार्य जी ही थे। उसका जो काम हो रहा है उसका असर संस्कृत की शिक्षा पर अवश्य अच्छा होगा।

सन् १९४७ में लिपिसुधार के सम्बन्ध में हमने एक कमेटी बैठाई और उसकी अध्यक्षता भी मेरे अनुरोध पर आचार्य जी ने स्वीकार की। लखनऊ में ही एक आल-इन्डिया सम्मेलन हुआ जिसके सभापति डाक्टर राधाकृष्णन् थे और उसमें सेन्ट्रल गवर्नमेंट तथा सभी प्रादेशिक सरकारों के प्रतिनिधि आये। नागरी लिपि का नया रूप स्वीकार हुआ जो कि आज उत्तर प्रदेश में हर जगह चल रहा है। सभी सरकारों ने उसे स्वीकार कर लिया है और यह आशा की जाती है कि वह सारे देश में चालू हो जायगी क्योंकि बंगाल, महाराष्ट्र और गुजरात ने भी कहा है कि वे इसके लिये कोशिश करेंगे। इस चीज़ का आधार भी उस कमेटी की रिपोर्ट थी जिसके अध्यक्ष आचार्य नरेन्द्रदेव जी थे। मैं इन चार पाँच बातों का ज़िक्र इसलिये कर रहा हूं कि सम्भव है कि आगे चलकर हम उनकी केवल राजनैतिक बातों का ही ध्यान रखें और इन चीज़ों को भूल जावें। उनके समाज और शासन के ऊपर बहुत बड़े एहसान हैं। उनके कामों का असर पुश्त दर पुश्त तक रहेगा। यह एक राष्ट्रीय क्षति हुई है।

ऐसे मौके पर अपनी बातों का, निजी बातों का जिक्र करना शायद कुछ अप्रासंगिक हो लेकिन अपने को पूरे तौर से रोकना भी कठिन होता है। मेरा और उनका ३०–३५ वर्ष का साथ था। मुझसे और उनसे उम्र में ३–४ महीने का फ़र्क था। राजनीति का ऐसा क्षेत्र है जिसमें हजारों आदमियों से मनुष्य का सम्पर्क होता है। हजारों के साथ थोड़ा बहुत काम करने का मौका मिलता है। और सैकड़ों के विरोध में काम करना पड़ता है। राजनीति में एक्वेन्टेन्सेज़ होते हैं ; 'कलीग्स' जिसे कहते हैं, मिल जाते हैं। ऐसा समझा जाता है, और शायद ठीक भी है कि राजनीति वह क्षेत्र है जिसके मधुर अनुभूतियों को कोई जगह नहीं है। लेकिन यहाँ राजनैतिक सम्पर्क मित्रता में परिणित हुआ और उसमें नरेन्द्रदेव जी से मेरे जैसे भाग्यवानों का सम्पर्क था। एक नहीं, सैकड़ों बातें इस ३०–३५ वर्ष की लम्बी मियाद की याद आती है जबकि हमने घंटों बैठकर गम्भीर प्रश्नों पर विचार किया है जिस समय कि हम हंसी मजाक

में भी शरीक हुये। अब उन सब बातों की चर्चा करना बेकार सा मालूम होता है। अभी हाल में जो उनकी कोइम्बटूर की यात्रा हुई उस पर उनको भेजने में कुछ थोड़ा सा मेरा भी हाथ था। जैसा कि मैंने अभी कल रेडियो पर कहा था, मेरी तो कुछ ऐसी भावना है कि दमे की बीमारी तो उनको थी ही लेकिन उनको दमे की बीमारी ने नहीं बल्कि राजनीति ने मारा है। उनकी कर्तव्य-बुद्धि उनके लिये घातक हुई। बीमारी में भी लोग उनके पास सलाह-मश्विरे के लिये आते थे और वह अपने को रोक नहीं सकते थे। वह अपनी जिम्मेदारी समझते थे देश के लिये, अपनी पार्टी के लिये और समाज के प्रति। वह जोर से बोलने के आदी थे और हम लोग जो उनके मित्र थे उनसे कहते भी थे और दबाव भी देते थे कि उनको धीरे से बोलना चाहिये। मगर वह घंटों बात-चीत किया करते थे और लम्बी-लम्बी थीसिसें लिखा करते थे, और घंटों तक सोचा करते थे। उनके मित्रों ने उनसे यह निवेदन किया कि उन्हें ऐसी जगह जाना चाहिये जहाँ लोग उनके पास न पहुंच सकें। थोड़ी बहुत कोशिश सफल भी होती थी लेकिन चिन्तन से कोई कैसे बचा सकता है? इसका परिणाम यह हुआ कि जर्जर शरीर को बीमारी ने जो कुछ किया वह तो किया ही, इस निरन्तर चिन्तन ने और भी खोखला कर दिया। बहरहाल, अभी थोड़े दिन हुये, अभी श्री प्रकाशजी यहाँ आये थे, और ऐसा ख्याल हुआ कि अगर नरेन्द्रदेव जी को कोइम्बटूर भेज दिया जाय तो उनका स्वास्थ्य सुधर जायगा क्योंकि वहाँ की जलवायु उनके अनुकूल पड़ती थी। वह चले गये उनसे बातचीत करके, और मेरे जिम्मे यह काम छोड़ गये। मैंने भी नरेन्द्रदेव जी पर दबाव डाला और वह राजी हुये। हम लोगों ने सोचा कि हवाई जहाज से वह जल्दी पहुंच जावेंगे और आसानी भी होगी, उनको कष्ट कम होगा। बड़ी बहस के बाद वह राज़ी हुये। उनका आग्रह था कि हवाई जहाज का खर्चा उत्तर प्रदेश की सरकार पर या फ्लाइंग क्लब पर न पड़े। मैंने कहा कि ऐसा नहीं होगा। उनको हमने भेजा। उस समय हम यह नहीं जानते थे कि हम उन्हें एक ऐसी यात्रा पर भेज रहे हैं जिसके बाद फिर मिलना नहीं होगा। गये वह, और ऐसी खबर आई कि उनका स्वास्थ्य सुधर रहा है। आज से ४ दिन पहले श्री प्रकाश जी का पत्र आया कि उनकी तबियत अच्छी है, और यह कि बराबर वह इस बात का तकाज़ा कर रहे हैं कि तुमने अभी तक हवाई जहाज के पैट्रोल का बिल नहीं भेजा? खैर, वह मैं क्या भेजूंगा, लेकिन मैं बतलाता हूं कि यह हालत थी और कल यकायक उनके निधन का समाचार आया। इससे हम सब लोगों को जो शोक है उसकी बाबत कुछ विस्तार से कहना मेरे लिये सम्भव नहीं है। मेरा यह निवेदन है कि आप हम लोगों के शोक को उनके परिवार को पहुंचा दें। उनके बड़े भाई जीवित हैं और वह स्वयं भी इस समय बीमार हैं। उनकी पत्नी हैं, उनके दो लड़के हैं, लड़कियाँ हैं। निश्चय ही वे लोग शोक-सन्तप्त होंगे परन्तु शायद उनको इस बात से सांत्वना मिले कि उनके शोक में हजारों उनके देशवाशी उतने ही दुखी हैं। नरेन्द्रदेव जी का शव हवाई जहाज़ के जरिये से आज यहाँ आने वाला है। कल रात में प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने मुझे यह खबर दी थी कि यहाँ लगभग सवा तीन बजे पहुंचेगा। लेकिन अभी दो तीन मिनट हुये श्री प्रकाश जी का वायरलेस संदेश आया है कि वह वहाँ से सवा नौ बजे दिन में चला है और लगभग ५ बजे पहुंचेगा।

मेरा एक अनुरोध और है कि हम सभी लोग दुखी हैं और साधारण तौर से हम लोग जो सदन में काम करते हैं, उसमें हमारा मन लगना कठिन है और कुछ लोग हवाई जहाज के अड्डे पर भी जाना चाहेंगे, इसलिये मेरा आपसे यह अनुरोध है कि शोक की कार्यवाही के समाप्त होने के बाद आज के दिन के लिये इस सदन को स्थगित कर दिया जाय।

*श्री गेंदासिंह (जिला देवरिया)—माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे लिये जीवन में शायद यह पहला अवसर है, और शायद आगे भी ऐसा अवसर आने न पाये जब कि ऐसे व्यक्ति के लिये मुझे अपनी श्रद्धा और अपनी वेदना प्रकट करनी पड़े। मैं अपने मन में आचार्य जी को क्या समझता था, उसको समझते हुये भी मैं अपने को असमर्थ पाता हूं कि उनके देहावसान पर उनके बारे में कुछ कहूं और अपनी भावनाओं को आपके समक्ष रख सकूं। मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि मैं आचार्य जी की किस बात की चर्चा करूं? मेरे सामने इस वक्त भी वह सीधी साधी सूरत, सादगी का अवतार, त्याग और तपस्या की मूर्ति, मेरी आँखों के सामने है। मैं साहस नहीं कर सकता कि उसको अपने सामने से हटा सकूं! मैंने उनमें जो कुछ देखा था वह यह कि वह समाज को जो कुछ दे सकते थे वह उन्हें देने में कभी भी हिचक नहीं हुई, लेकिन समाज से उन्होंने कितना लिया उसके बारे में मैं ऐसा समझता हूं कि शायद हमारे देश में अकेले वही ऐसे आदमी थे जिन्होंने सबसे कम लिया हो। मैं महात्मा जी के महत्व को समझते हुये इस बात को कह रहा हूं। त्याग की महत्ता उसकी है जिसके सामने सारा ऐश्वर्य उसकी भावनाओं और इच्छा पर आश्रित हो लेकिन उसे उसका कोई मोह न हो, उसी के जीवन के बारे में हम ऐसी बात कहेंगे। देश की ऊंची से ऊंची चीज अगर कुछ हो सकती थी, वह उनको प्राप्य थी। परन्तु मेरा ऐसा ख्याल है कि उन्होंने उसका साथ छोड़ कर के दूसरा मार्ग लिया। किसी व्यक्ति के लिये आचार्य जी के त्याग की चर्चा करना सम्भव नहीं है क्योंकि उन के त्याग की जानकारी ही किसी को नहीं है। वह चाहते भी थे कि उनके त्याग की जानकारी ही किसी को न हो सके। यह उनका आदर्श था। मैंने विनोबा जी के विचारों की एक पुस्तिका एक बार पढ़ी थी, उसमें उन्होंने एक कहानी लिखी थी कि एक धनी आदमी था उसको कोई उपदेश कर रहा था और त्याग का पाठ पढ़ा रहा था। उसने कहा कि धर्मशाला बनवाओ, विश्वविद्यालय बनवाओ, कुआ खुदवाओ लेकिन उसके बाद जब उस को ज्ञान हो गया तो उसने कहा कि इस सब में भी तो कुछ भावना ऐसी है जो देश में नाम की प्रसिद्धि प्राप्ति की है, और यह धन तो हमने कुछ अच्छे उपायों से नहीं कमाया है, उसको तो यदि हम नदी में छोड़ आयें और कोई न जाने, तो ऐसा त्याग ही विनोबा जी के अनुसार आदर्श त्याग हो सकता है। इससे भी ऊंचा त्याग आचार्य जी का था, ऐसा मैं समझता हूं।

अभी कुछ दिन पहले जब आचार्य जी मेडिकल कालेज में थे तो कभी-कभी उनसे मिलने का मौका मिलता था। जैसा कि माननीय मुख्य मन्त्री जी ने कहा कि हम लोग उस लोभ का संवरण नहीं कर सके कि आचार्य जी से बात न करें। एक बार मैं उनसे बात कर रहा था, उनकी धर्मपत्नी आईं, और उनको देखते ही हम दोनों आदमी कुछ सहमे और हमने शीघ्र ही कहा कि अब हम जा रहे हैं। उसके बाद अशोक की माता जी ने कहा कि "आप चले जायेंगे तो कोई दूसरा आ जायगा, आप के जाने से क्या होगा? जहाँ आप पीठ उधर कीजियेगा तो बेतरह कराहना शुरू करेंगे, लेकिन जब मैं घर की बात की चर्चा करूंगी तो उस वक्त कहेंगे कि हम बीमार हैं। फिर भी कोई चला आयेगा तो उस से बात करने में वह यह नहीं सोचेंगे कि फिर थोड़ी देर बाद क्या होगा।', अशोक की माता जी चली गईं, मैं बैठा रहा, उसके बाद आचार्य जी ने कहा कि इस जिन्दगी की ही क्या जरूरत है, इस तरह से हम जी के भी क्या करेंगे जिस में हम कुछ कर न सकें? यह उनके उस समय के उद्गार थे। उनकी जिन्दगी की कौन बात यहाँ कहना उपयुक्त होगा यह मेरी समझ में नहीं आता, यह तो विद्वानों का काम है कि उनके गुणों की चर्चा करें, मैं तो केवल उन्हीं

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

बातों की चर्चा करना चाहता हूं कि जिन को मैं कह सकूं। मैं उनके त्यागमय और तपोमय जीवन से कह सकता हूं कि वह देश के उन चन्द तपस्वियों में से थे जिन के नाम पर भारत गर्व कर सकता है। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। यह भी सही है कि उनकी विद्वत्ता का जितना लाभ हम उठा सकते थे उतना लाभ हम न उठा पाये। सोचना होगा कि क्यों नहीं उठा पाये? जो कुछ भी उनकी देन है उस देन से अगर हम लाभ उठायेंगे तो भारतवर्ष बहुत कुछ लाभ उठा सकता है। अभी माननीय मुख्य मन्त्री जी ने उस पुस्तक की चर्चा की। मैंने अभी पता लगाया था कि वह ६ सौ पन्ने की पुस्तक तो छपने की क्रिया में है। १ हजार पारिभाषिक शब्दों का वह संग्रह करना चाहते थे जिससे कि उस पुस्तक को पढ़ने में लोगों को आसानी हो, जिसमें केवल चार सौ शब्दों का संग्रह वे कर सके हैं बाकी नहीं कर पाये। बड़ी प्रबल इच्छा थी हम लोगों की कि बुद्ध जयन्ती के इस २५सौवें वर्ष पर जब कि कुशीनगर, सारनाथ, लुम्बिनी और सारे देश के लोग आ रहे हैं, उस समय वहाँ हम कम से कम आचार्य जी को जाने के लिये प्रेरित करते और इस अवसर पर अगर वे हमारे बीच में होते तो हमारा ऐसा विचार है कि शायद सारे संसार के जो बुद्धदर्शन और बुद्धधर्म के मानने वाले हैं उनको यह लगता कि भारतवर्ष में भी कोई ऐसा व्यक्ति है कि जो बुद्धदर्शन और बुद्धधर्म पर कमान्ड रखता है। हमारी इच्छा पूरी नहीं हुई, बहुत सी इच्छायें हमारी नहीं पूरी हुईं, वे अरमान आचार्य जी के साथ चले गये। हम समझते हैं कि आचार्य जी कि जो कीर्ति है वह हमारे देश में अमर रहेगी। सबसे बड़ी हम अपने मन में यह बात समझते हैं, और जो माननीय मुख्य मन्त्री जी ने कहा कि राजनीतिक विचारों में तीव्र मतभेद होते हुये भी जो उनकी मित्रता थी, जो उनका सौजन्य था उसमें कभी अन्तर नहीं आया, किसी से अन्तर नहीं आया। किसी व्यक्ति के लिये यह नहीं कहा जा सकता कि जो कोई आचार्य जी के यहाँ गया वह उनसे अगर वह स्वयं रुष्ट न होना चाहे तो वह रुष्ट होकर के आया हो चाहे वह किसी दल का, किसी प्रकार का आदमी हो। ऐसा व्यक्ति, ऐसी महानतम आत्मा मिलना दुश्वार है, असम्भव है। हमारे देश में अगर उनकी कीर्ति से कुछ लोग उनके गुणों के हो सकें तो हमारे देश के लिये बड़े सौभाग्य की बात होगी।

मैंने शुरू में ही कहा कि मैं नहीं प्रदर्शित कर सकता आचार्य जी के प्रति अपनी श्रद्धा को और अपनी उस वेदना को जो आचार्य जी के न होने से मुझे आज हो रही है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि यह भी कहते हुये मुझे संकोच हो रहा है कि उनके परिवार के लोगों को यह संवेदना, हमारी यह भावनायें पहुंचाई जायं, उनका परिवार सारा भारतवर्ष था, अगर सारा संसार कहे तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। हमारी यह भावनायें उस परिवार को और इस बड़े परिवार के पास पहुंचा सकें तो यह आपकी बड़ी कृपा होगी। मैं इन्हीं शब्दों के साथ, माननीय मुख्य मन्त्री जी ने जो कुछ कहा उसका समर्थन करते हुये, अपनी श्रद्धांजलि अपने दूसरे मित्रों की तरफ से भी आदरणीय आचार्य जी के लिये अर्पित करता हूं।

**महाराजकुमार बालेन्दुशाह** (जिला टेहरी-गढ़वाल)—अध्यक्ष महोदय, ऐसे क्षोभ के अवसर पर शान्ति देने के लिये अक्सर यह कहा जाता है कि जीना और मरना तो हमेशा लगा ही रहता है। बात तो सही है, किन्तु हृदय में जो चोट पहुंचती है उसको शान्ति पहुंचना असंभव है खास कर जबकि किसी एक ऐसे व्यक्ति के स्वर्गवास होने के सम्बन्ध में जो शोक उठता है जो न किसी एक दल का, न किसी एक संस्था का या किसी एक देश के एक भाग का व्यक्ति

[महाराजकुमार बालन्दुशाह]

हो, बल्कि जिसके लिये सम्पूर्ण प्रदेश और सम्पूर्ण भारत आज शोक मना रहा हो! अध्यक्ष महोदय, अधिक कहना कठिन है किन्तु नरेन्द्रदेव जी में जो खूबियाँ थीं उनकी चर्चा करते हुये इतना मैं अवश्य कहूंगा कि वे ऐसे व्यक्ति थे जिनका स्वर्गवास होने से केवल हम सरीखे जो राजनीति में भाग ले रहे हैं उनको ही दुख नहीं है, केवल मित्र गेंदासिंह सरीखे जो उनकी संस्था के एक सदस्य हैं उनको ही दुख नहीं है, हमारे मुख्य मन्त्री और उनके साथियों को ही केवल मात्र दुख नहीं जो कि उनके साथ काम किये हुये हैं बल्कि सम्पूर्ण प्रदेश और सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रत्येक व्यक्ति को दुख है। विद्यार्थियों की शिक्षा के सम्बन्ध में केवल मात्र यह नहीं कि उन्होंने सरकार की किसी एक समिति की अध्यक्षता स्वीकार करके सहायता की हो बल्कि शिक्षा के साथ उनका जितना सम्बन्ध रहा है, मैं तो समझता हूं कि विद्यार्थी वर्ग उसको कभी नहीं भूल पायेगा। यहाँ के दो विश्वविद्यालयों में उन्होंने वाइस-चाँसलर का पद स्वीकार किया और वह पद स्वीकार करने के बाद उन विश्वविद्यालयों में जो परिवर्तन हुआ, वह सबको मालूम है। जिस प्रकार उन्होंने विद्यार्थियों के बीच में प्रेम और विद्या प्राप्त करने की भावना उत्पन्न की, यह भी सभी को मालूम है।

अध्यक्ष महोदय, ऐसी एक 'डायनेमिक स्प्रिट' उनमें थी यदि ऐसा मैं उनके बारे में कहूं तो कुछ अनुचित न होगा। साथ ही साथ उन सरीखे ओरिजिनल थिंकर भी कम पाये जाते हैं। हमारी सबकी एक कमजोरी है, कोई बड़ा व्यक्ति कोई बात कहे तो उसको स्वीकार करने के लिये हम तैयार हो जाते हैं लेकिन 'ओरिजिनल थिंकिंग' कुछ लोगों में रही हो तो उनमें से आचार्य नरेन्द्रदेव जी एक हैं। निस्वार्थ सेवा की जो भावना उन्होंने हमारे सामने रक्खी वह एक नमूना है। वे एक अधिकार का पद जब चाहते तब प्राप्त कर सकते थे, किन्तु नहीं, उनकी ओरिजिनल थिंकिंग और डायनेमिक स्प्रिट में जो भी उनके विचार रहे उनका प्रोपेगंडा करने के लिये उन्होंने यही उचित समझा कि यह अधिकार का पद स्वीकार करना अपने हाथ बाँधना होगा। इसलिये उन्होंने अपने विचारों को फैलाने के लिये जो भी कार्य किया वह एक पूर्णतया निःस्वार्थ भावना से, पद लोलुपता से दूर हो कर किया। अध्यक्ष महोदय, मैं और मेरे दल के सब सदस्यगण पूरी तरह माननीय मुख्य मन्त्री के शोक प्रस्ताव के साथ हैं और आपसे यही प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार को हमारी तरफ़ से हमारे विचार पहुंचा दिये जायं।

**श्री रामनारायण त्रिपाठी** (जिला फ़ैज़ाबाद)—आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आचार्य नरेन्द्रदेव जी सारे प्रदेश, सारे देश के ही नहीं वरन् सारे संसार के व्यक्ति थे, लेकिन चूंकि वे फ़ैज़ाबाद के निवासी थे इसलिये यह स्वाभाविक है कि एक संसारिक जीव होने की वजह से फ़ैज़ाबाद के लोग उनको अपना समझें। तो इतने महान् व्यक्ति की मृत्य के साथ-साथ इस मृत्यु को मैं अपना एक निजी नुकसान भी इस मानी में समझता हूं। उनके दर्शन करने का मुझे पहला मौका १९२९ में हुआ था और तब से लगातार मैं उनके बहुत निकट सम्पर्क में रहा। उनके विचारों में कितनी स्पष्टता थी यह देख कर मैं दंग रह जाता था। समाजवाद की तरफ उनका पहले से ही रुझान था। लेकिन उन्होंने समाजवाद को कभी रोटी और कपड़े की समस्या का हल नहीं समझा। बल्कि वह महानतम मानव मूल्यों का एक आदर्श समझते थे, और मुझे ऐसा भी मौका मिला है जब कि अधिनायकवाद के बारे में उन्होंने निजी बातचीत में इतनी दृढ़ता के साथ विरोध किया जिस का प्रभाव किसी के ऊपर भी पड़ सकता था। ऐसे भी जीवन में मौके आये हैं जब आचार्य नरेन्द्रदेव जी के साथ दरजनों बार दो-दो तीन-तीन घंटे बैठने और उनके जीवन को नजदीक से देखने का मौका मिला है। हम लोगों को सदा यही चिन्ता रहती थी कि किसी

तरह से उनके यहाँ जो आगंतुक लोग हैं उनके लिये कोई नियम बना दिया जाय, और जितने भी उनके प्राइवेट सेक्रेट्री थे, हम लोग उनसे कोशिश करते थे कि कोई उनके लिय नियम बनवायें। लेकिन कभी भी उसमें सफलता नहीं हुई। और मैं समझता हूं कि अगर इसमें सफलता प्राप्त हुई होती तो आचार्य नरेन्द्रदेव जी की और भी महान् देन हमारे देश और संसार के लिये होती। लेकिन कभी भी उन्होंने जीवन का मोह नहीं किया। हम लोग जब कभी उनको ध्यान दिलाते कि अभी कल तक आप को दौरा बहुत तेजी का था, आखिर आप का यह व्यक्तित्व अपना तो है नहीं, सारे राष्ट्र और देश का है। तो उस समय वह सिर्फ इस तरह से एक उपेक्षा की हंसी हंस दिया करते थे और वह उपेक्षा की हंसी, अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि गीता के विज्ञान के अनुसार एक स्थितप्रज्ञ व्यक्ति की हो सकती थी जिसको जीवन से कोई मोह और किसी से राग और द्वेष न हो। वह समझते थे और कहा करते थे कि यह जो दमा की बीमारी मेरे पीछे पड़ी यह भी मेरी लापरवाही का कारण है। मुझे ठीक समय पर इसका इलाज करने का मौका नहीं मिला था। उसको तो जीवन संगिनी बना कर रखा। कभी भी उसकी वजह से कोई कठिनाई उनके रास्ते में नहीं आई। दमा की बीमारी से स्पष्टत: ही उनको हानि हुई क्योंकि वह दौरे वगैरह ज़्यादा नहीं कर सकते थे। नज़दीक से सारी चीजों को देख सकने और उसके अनुसार सेवा करने का मौका नहीं मिलता था, और जैसे वह महान् विद्वान थे उनकी विद्वता से जो कुछ वह सारे संसार को देन दे सकते थे उसमें कठिनाई अवश्य हुई। लेकिन जरा सा मौका पाकर चार बजे सुबह से लेकर ११-१२ बजे रात तक वह हमेशा इस प्रयत्न में रहते थे कि लोगों से मिलने-जुलने के बाद थोड़ा बहुत मौका उन्हें मिले तो संसार के लिये जो कुछ दे सके उसके लिये प्रयत्न करें। मैंने ऐसे भी व्यक्ति देखे जो सुबह आठ बजे से लेकर लगातार एक बजे दिन तक उनके पास बैठते थे लेकिन हर आदमी आता था तो उससे यही कहते थे, अरुखा, आ गये आप, आइये! और दस घंटे बैठने के बाद भी उनके मुख पर संकेत मात्र भी ऐसा भाव न होता कि आप काफी देर तक बैठ चुके, अब चलना चाहिये। आखिर में जब चलने के लिये पूछते तो बड़ा ध्यान दे कर पूछते 'कि अब जाइयेगा'? ऐसे निकट सम्पर्क में रहने वाले को कल साढ़े छ: बजे रेडियो पर जब यह शोक समाचार सुनाई पड़ा तो सारा उनका जीवन चित्र सामने आ गया। माननीय मुख्य मन्त्री के कहने के बाद भी कि उनकी मृत्यु हो चुकी है, उनकी लाश आ रही है, लेकिन मेरा मन विश्वास करने के लिये तैयार नहीं है कि उनकी मृत्यु हो सकती है। आचार्य नरेन्द्रदेव जी का पार्थिव शरीर चाहे अलग हो गया हो लेकिन उनकी मृत्यु कभी नहीं हो सकती। वह हमेशा के लिये राष्ट्रीय इतिहास में अमर रहेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि चार छ: ऐसे इनेगिने व्यक्ति देश में बाकी रह गये थे जिन्होंने लगातार अपना जीवन राष्ट्र के लिये बिताया था। उनके निकट सम्पर्क में रहने के कारण मुझे इस बात का भी मौका मिला, मैंने देखा कि उनकी कोई प्राइवेट फ़ाइल नहीं थी। कभी-कभी बड़े महत्वपूर्ण डाकुमेंट्स उनको देने का मौका मिला और उन्होंने सीधे अपनी बाईं पाकेट में रख लिया। मैंने चिन्ता प्रकट की कि यह कहीं खो जायगा और काम नहीं हो सकेगा तो उन्होंने कहा कि सबसे बड़ी प्राइवेट फ़ाइल मेरी बाँयी पाकेट है। रोज स्नान के बाद जब कपड़ा बदलते थे तो कुर्ते की पाकेट से कागजात निकाल कर आवश्यकतानुसार कार्य करते थे। कभी प्राइवेट सेक्रेट्री पर इस बात का बर्डन नहीं कि उसे कौन सा काम करना है, और खास-खास मामलों में वे अपने ऊपर ही सब जिम्मेदारी लिये रहते थे। उनका ढीला ढाला जीवन देख कर और अपने आगन्तुकों के साथ जो व्यवित इस तरह से नियमितता नहीं बरत सकता था, यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि वह महान प्रशासक हो सकेगा इस बात की मुझे

[श्री रामनारायण त्रिपाठी]

बड़ी शंका रहती थी। यों तो ऐसा समय आया नहीं जब कि वे देश के प्रशासक का काम करते। सन् १९३६ में जब कांग्रेस ने देश की बागडोर सम्हाली उस समय भी उन्होंने अपने उच्च सिद्धांतों पर अटल रहने के कारण उसको ठुकरा दिया। अध्यक्ष महोदय, वे बहुत दूर की बातें सोचा करते थे। मुझे याद है कि जब अहमदाबाद फ़ोर्ट से छटकर आये तो उन्होंने एक थीसिस दिखाई जिसमें उन्होंने सन् १९४२ के बाद ही काँग्रेस छोड़ने की बिलकुल स्पष्ट विचार-धारा लिखी थी। और यों काँग्रेस तो छोड़ा उन्होंने सन् १९४८ में, लेकिन उसके पहले से ही वे निश्चय कर चुके थे। हाँ, मैं जिक्र कर रहा था कि उनके प्रशासक होने का। जिस समय लखनऊ विश्वविद्यालय और बनारस विश्वविद्यालय में उनके प्रशासन के काम को देखने का मौका मिला, तो आश्चर्य हुआ। यों तो सिफारिशें सभी लोग करते हैं और आजकल तो सिफारिशें लाने वाले हर वक्त कहीं न कहीं से पहुंचने की कोशिश करते हैं लेकिन हमारी कभी हिम्मत उनसे नहीं पड़ी। और अगर कभी हमने कमजोरी दिखाई तो उन्होंने इस मृदुलता के साथ इनकार किया कि उसको देख कर मैं दंग रह गया। उनके प्रशासकीय जीवन को देख कर जो उन्होंने लखनऊ और बनारस विश्वविद्यालयों में बिताया निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि वे महान् प्रशासक थे।

आचार्य नरेन्द्रदेव जी हम लोगों के बीच में नहीं हैं। उनके निधन से देश को ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान में समाजवादी आन्दोलन को भी महान् हानि हुई है। अध्यक्ष महोदय, इस अवसर पर मैं इससे ज्यादा क्या कहूं। हम भी अपने दल की ओर से आपसे प्रार्थना करते हैं कि उनके संतप्त परिवार के लोगों को हमारी समवेदना और सहानुभूति पहुंचा दें और उनको यह बतलादें कि उन्हें चिन्ता करने की बात नहीं क्योंकि आचार्य जी के निधन से सारा देश ही सतप्त है।

**श्री झारखंडेराय** (जिला आजमगढ़)—आदरणीय अध्यक्ष महोदय, समस्त देश इस बात से अवगत था कि आचार्य जी इधर पिछले कई वर्षों से मृत्यु से निरंतर संघर्ष कर रहे थे। लेकिन हम में से कोई भी इस बात के लिये तैयार नहीं था कि वह इतनी जल्दी हमारे बीच से मृत्यु के निर्मम हाथों के ज़रिये छीन लिये जायेंगे। इसीलिये आज समस्त देश क्षुब्ध है और हम सभी क्षुब्ध हैं। आचार्य जी से प्रथम परिचय का सौभाग्य मुझे सन् १९३८ में प्राप्त हुआ था, जब बाराबंकी ज़िले के हरहा नामक स्थान पर काँग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का एक स्कूल आफ पौली-टिक्स चालू किया गया था। वहां मैं एक विद्यार्थी के रूप में गया था। तब से लेकर और पिछले १७ वर्षों में कई बार आचार्य जी के सम्पर्क में आने, उनसे विचार विनिमय करने और उनके साथ रहने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो चुका है। आज के दलगत राजनीति के जगत में बहुत कम विभूतियाँ ऐसी होती हैं जो दलगत राजनीति में रहते हुये भी उससे परे रहे। आचार्य जी भारतवर्ष के उन महान् पुत्रों में से रहे जो विशिष्ट राजनीति और राजनीतिक पार्टी से प्रारम्भ से ही अपना सम्बन्ध बनाये रख कर भी दलगत की छोटी राजनीति एवं तुच्छ भावनाओं से हमेशा ही ऊपर रहे, और इस माने में मैं आचार्य जी के प्रति हमेशा ही अपनी निष्ठा और श्रद्धा व्यक्त करता रहा हूं। आचार्य जी राजनीतिक नैतिकता एवं साधनों की उच्चता और पवित्रता में विश्वास करते थे। यह भी उनकी महानता का एक विशेष कारण है। अनेक उच्च गुणों का एक व्यक्ति के अन्दर इक्ट्ठा होना यह भी किसी राष्ट्र और देश के जीवन में कम पाया जाता है। आचार्य जी हमारे देश की उन महान विभूतियों में थे जिनके अन्दर कई प्रकार के उच्च

गुण और आदर्श एक साथ ही विद्यमान थे। यही वजह थी कि राजनैतिक विरोधी या उनसे भिन्न मत रखने वाले लोग भी हृदय के अन्तस्तल से उनके प्रति इज्जत रखते थे। आज उनके परिवार के शोक से समस्त भारत दुखी है, और यह दुख उनके परिवार का ही नहीं समस्त भारत का है, वे पूरी तरह राष्ट्र के हो चुके थे। मैं समझता हूं कि उनके परिवार के प्रियजन और उनके निकटतम सम्बन्धी भी इससे अपना दुख का बोझ हलका होता हुआ महसूस करेंगे। आचार्य जी का जो व्यक्तित्व हमारे देश में अब तक था, खासकर जिस राजनितिक पार्टी से उनका सम्बन्ध था, और इधर उस पार्टी को जिस नीति के अधार पर वह चलाना चाहते थे अध्यक्ष महोदय, मैं उसमें भारत के उज्ज्वल भविष्य की झांकी देख रहा था और मैं महसूस करता था कि हमारे देश के भविष्य के लिये उनकी जो आधुनिकतम समझदारी हमारे सम्मुख आयी थी वह एक ज्वलंत उदाहरण का काम करेगी। आचार्य जी हमारे बीच से चले गये लेकिन मैं समझता हूं कि उनके ऐसे विचार रखने वालों के लिये ही नहीं वरन् सभी के लिये वह सर्वदा एक प्रकाश स्तम्भ का काम मृत्यु के बाद भी करते रहेंगे। इसलिये मैं तो समझता हूं कि वह मरे नहीं बल्कि वह सर्वदा, हमारे बीच में एक प्रकाश पुंज की तरह से जीवित रहेंगे। व्यक्ति मरते हैं परन्तु उनके आदर्श, त्याग, बलिदान और ऊंचे विचार यहीं अमिट होकर मानव जगत में रह जाते हैं और इतिहास के पत्रों में अंकित रहते हैं। ऐसे महान व्यक्तियों के वे ही पद चिन्ह जो वे समय-प्रवाह पर छोड़ जाते है उनके पीछे चलने वालों के लिये, अनुकरण करने के लिये एक आदर्श का काम करते हैं। अध्यक्ष महोदय सचमुच जब हृदय भारी होता है तो शब्द भावों को व्यक्त करने के लिये नहीं मिलते। व्यक्तिगत रूप से मेरी भी आज वही दशा है। मुझे वह दिन याद है जब कानपुर में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का जलसा हो रहा था। मैं भी एक दर्शक की हैसियत से वहाँ गया था। आचार्य जी उस प्रस्ताव का समर्थन कर रहे थे जिसका अर्थ यह था कि कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नाम से 'कांग्रेस' शब्द निकाल दिया जाय। आचार्य जी का भाषण मैंने वहां सुना। किस दर्द और किस कसक से वह कांग्रेस नाम से अपना सम्बन्ध विच्छेद करने के प्रस्ताव का समर्थन कर रहे थे। उनकी भावनायें उनके शब्दों के जरिये इस प्रकार भावात्मक रूप में व्यक्त हो रही थीं और उनका इतना गहरा प्रभाव मेरे ऊपर पड़ा था कि आज भी वे शब्द और सारा चित्र मेरे सामने जीवित सिनेमा की तरह नाच रहा है। अधिक न कह कर मैं अपनी श्रद्धांजलि उनके महान् जीवन के प्रति अर्पित करता हूं, और मैं अपनी ही नहीं बल्कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की, उत्तर प्रदेश सूबा कमेटी की ओर से अधिकृत तौर पर हार्दिक संवेदना और शोक उनके प्रति प्रकट करता हूं और आशा करता हूं कि इस सदन की भावनाओं के साथ, मुख्य मन्त्री जी, नेता विरोधी दल और नता संयुक्त दल की भावनाओं के साथ आप मेरी इन हार्दिक भावनाओं को भी उनके प्रिय जनों और निकटतम सम्बन्धियों तक पहुंचाने का कष्ट करेंगे।

**श्री अध्यक्ष**—आदरणीय आचार्य नरेन्द्रदेव जी के अकस्मात् स्वर्गवासी होने पर जो हमारे देश के सभी देशवासियों को धक्का लगा है उसका अनुभव आज ही मुझे चन्द घंटे पहले हुआ। कल तक मुझे मालूम नहीं था। मैं यात्रा में था और सबेरे आज लखनऊ आने पर गुप्ता जी की कार में ही उनके घर तक गया। वह मेरे साथ थे और हम दोनों को एक साथ उनने दरवाजे पर यह खबर उनके ड्राइवर ने दी। अचानक वह भी भौचक्के से रह गये और मैं नहीं कह सकता मेरी क्या हालत थी। मेरे हृदय पर बिजली का सा प्रहार उस वक्त यकायक हुआ। आज मैं देखता हूं सदन में ऐसे मौके हमारे सामने पहिले भी आये, लेकिन चेहरों को देखते हुये जितने शोकाकुल आज सदन के सदस्य हैं, ऐसा प्रसंग बिरले ही हमारे सामने आया हो। कुछ

[श्री अध्यक्ष]

तो मुझे रोते हुये दिखाई देते हैं और उनकी तरफ़ में सिर उठाकर देख भी नहीं सकता हूं। जो शोक की भावना नेता सदन और अन्य नेता पार्टियों ने व्यक्त की हैं उनके साथ में अपने को सम्बद्ध करता हूं। मेरे पास शब्द नहीं हैं, किन शब्दों में मैं अपनी श्रद्धांजलि उस दिवंगत आत्मा, उस तपस्वी, उस श्रद्धेय महान् पुरुष के प्रति अर्पित करूं? मेरे सामने तो उनकी मूर्ति प्रत्यक्ष आ जाती है। वह सौजन्य की मूर्ति, वह वात्सल्य भरी मूर्ति, वह हंसती हुई मूर्ति, सदैव मैं समझता हूं, जब-जब उनकी याद आयगी प्रत्यक्ष खड़ी होगी।

वह अनेक क्षेत्रों में हमारे पथ-प्रदर्शक और आदर्श रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में, जैसा नेता सदन ने कहा, जो कि अधिक जानकारी रखते हैं, उन्होंने कहा कि हर शिक्षा के क्षेत्र में, चाहे वह प्रारम्भिक शिक्षा हो, चाहे यूनिवर्सिटी की उच्च से उच्च शिक्षा हो, प्रारम्भ से लेकर अन्त तक वह हमारे मार्ग-प्रदर्शक रहे और उन्हीं के बताये हुये मार्ग का हमने अनुसरण करके अपने देशवासियों को लाभ पहुंचाया।

जहां तक सामाजिक दर्शन का सम्बन्ध है, मैं यह कह सकता हूं कि सब से अधिक श्रेय अगर सामाजिक व्यवस्था का नवीन रूप दिलाने के लिये अगर किसी को है तो उन्हीं को प्रथम स्थान दिया जा सकता है, क्योंकि यदि उस रास्ते पर प्रतिष्ठित होकर कोई व्यक्ति कमर कस के उसके पीछे पड़ गया हो तो वह व्यक्ति हमारे आचार्य नरेन्द्रदेव जी थे। मैं जानता हूं कि कांग्रेस के सिद्धांतों में और कार्यशैली में क्रान्तिकारी परिवर्तन उन्होंने ही कराया और उसी का फल, मैं समझता हूं, यह हुआ कि बहुजन समाज के बीच में कांग्रेस की प्रतिष्ठा और अधिक बढ़ी और स्वराज्य प्राप्ति में हमें आसानी हुई। यह उनका ही कार्य था कि कांग्रेस के अन्दर सोशलिस्ट पार्टी को बनाकर, उसके अन्दर रह कर कांग्रेस की विचार धारा में उन्होंने परिवर्तन कराया। स्वराज्य प्राप्ति के बाद में भी वह यह समझते थे कि हम शासक बन कर अपने हाथ पैर बाँधना नहीं चाहते। शासक बन कर कुछ न कुछ नियन्त्रण रखना ही पड़ता है क्योंकि शासन का जो संगठन है वह स्वतन्त्र विचार के लिये बाधक होता है। तो ऐसा स्वतन्त्र विचारक जो कि विश्व को कुटुम्ब समझता था, जो केवल अपने देश के लिये ही दर्शन नहीं बना रहा था बल्कि विश्व के लिये दर्शन तैयार कर रहा था और प्रयत्नशील था उसके लिये शासन का बन्धन कैसे सहा जा सकता था? जैसा कि हमारे नेता सदन ने खुद कहा बौद्ध दर्शन की पुस्तक लिखने की वे तैयारी कर रहे थे, जो अधूरी रह गई। तो जो ऐसे महान् प्रयत्न करते हैं मानव समाज के कल्याण के लिये, वे कब यह चाहते हैं कि शासन का कोई संगठन चलाने के लिये वे खड़े हो जायं और उसमें फंस जायं? आप जानते ही हैं कि महान पुरुष ऐसी चीजों में नहीं फंसते, उच्च कोटि के दार्शनिक नहीं फंसा करते और इस तथ्य के अनुसार ही आपने देखा होगा कि हमारे राष्ट्र पिता भी कभी शासन के चक्कर में नहीं फंसे क्योंकि उनका शासन तो मानव समाज के हृदयों पर शासन करना था, उसके मस्तिष्क के ऊपर शासन करना था, उसको सही रास्ता दिखाना था। वह रास्ता दिखाकर वे चले गये। उसी श्रेणी के हमारे आचार्य जी भी थे और उन्होंने भी इसी तरह से महात्मा जी से प्रेरणा पाई थी और उसी पर उन्होंने अपना जीवन ढाला था। उनके कांग्रेस के बाहर जाने पर भी जब जब मैं उनके पास गया, और मैं सपत्नीक और सकुटुम्ब जाया करता था, उन्होंने सदैव वही प्रेम कायम रक्खा और बरता। मुझे यह अच्छी तरह से मालूम है कि मेरे बच्चे भी उनके पास जाने में कभी नहीं डरते थे। बच्चों के साथ वे बच्चे थे, वह वात्सल्य उन्होंने उन से पाया कि चाहे मुझसे उन्हें डर लगे लेकिन आचार्य जी के सामने मेरे बच्चे कभी नहीं डरे। ऐसे ही अपनी स्त्री के

सम्बन्ध में मैं सोच सकता हूं कि मुझसे उन्हें डर हो सकता था कुछ बात कहने में, लेकिन आचार्य जी के सामने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में और अपनी दो चार बातें वाद-विवाद की भी उनसे करते हुये कभी हिचकिचाहट उन्हें नहीं होती थी। तो इस तरह के अभयदाता आचार्य जी थे। राजनीतिक मतभेद भी जिन लोगों से रहा उनके सभी कुटुम्बियों के साथ इतना वात्सल्य जिस व्यक्ति में हो ऐसे व्यक्ति बिरले ही होते हैं। मैं तो चाहता था और मैं हर दम उनसे यह कहता था कि "आचार्य जी, मुझे यह मौका नहीं मिला, आपके बहुत से चेले हैं मेरे साथ, लेकिन मुझे मौका नहीं मिला कि आपके चरणों में बैठ कर मैं कुछ शिक्षा प्राप्त कर सकूं। मैं अपना बड़ा सौभाग्य समझता यदि मुझे भी ऐसा मौका मिला होता।" तो वे हंसते थे और कहते थे "अजी, कैसी बात करते हो। तुम कुछ कम हो ?" इस तरह से प्रेरणा और प्रोत्साहन वे दिया करते थे। हर दम मेरे सामने उनकी वह हंसती हुई मूर्ति आती है, त्याग की, तपस्या से भरी हुई और प्रेरणा देने वाली। वह मूर्ति सदैव, मैं समझता हूं, हमारे लिये प्रेरणा देती रहेगी और उनके पद चिन्हों पर जो कोई भी हम में से चल सकें वह अपने जीवन का भी कल्याण कर लेंगे और मैं समझता हूं भारतवर्ष का भी कल्याण कर लेंगे। यह मेरी भावनायें आप सब के साथ हैं। जो नेता सदन ने प्रस्ताव रखा है और सदन के शोक की भावना है, और सदन के द्वारा जो श्रद्धांजलि उन के प्रति अर्पित की गई है और उनके कार्यों के प्रति उन्हें सभी हमारा जो विश्व का कुटुम्ब है वह जानेगा, और साथ ही मेरा भी कर्तव्य है कि सदन की ओर से मैं उनके कुटुम्बियों के प्रति वह सहानुभूति का सन्देश भेज दूंगा और बड़े कुटुम्ब के लिये भी वह प्रकाशित हो जायगा और जानकारी हो जायेगी, जैसा कि गेंदासिंह जी चाहते थे।

अब मैं सदन के सम्मानित सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि वे दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये परमात्मा से प्रार्थना करें।

(इसके उपरान्त सब सदस्यों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर दिवंगत आत्मा के प्रति ईश्वर के ध्यान के साथ श्रद्धांजलि अर्पित की।)

(इसके बाद सदन १२ बजकर ११ मिनट पर अगले दिन के ११ बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

मिट्ठन लाल,
सचिव, विधान मण्डल,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ,
२० फरवरी, १९५६।

PSUP L. 413 L. A.—15-3-56—880.